Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में श्री बंकिम चंद्र चटर्जी का योगदान

डॉ. शचि शुक्ला, सहायक प्राध्यापिका

संगीत गायन, आर्य गर्ल्स कॉलेज, अंबाला छावनी हरियाणा

Mail id: shukla.shachi.pta@gmail.com

भूमिका

भारत की आजादी एक लंबे स्वाधीनता आंदोलन की देन है इसमें तत्कालीन राजनेताओं, राजा महाराजाओं के अलावा साहित्यकारों, कवियों, वकीलों, विद्यार्थियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इस स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रहे साहित्यकारों ने 'वंदे मातरम' गीत के द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन में नई जान फूंकी तथा भारतीय साहित्य, भाषाओं को प्रबल कर नए आयाम स्थापित किए। ऐसे ही एक स्वतंत्रता सेनानी के द्वारा 1874 में लिखा गया एक अमर गीत 'वंदे मातरम' न केवल भारतीय स्वाधीनता संग्राम का मुख्य नारा बना बल्कि यह आधुनिक समय में देश का राष्ट्रगीत भी है। इस गीत को रचकर बंकिम चंद्र चटर्जी सदैव इतिहास में अमर हो गए हैं। 14 अगस्त 1947 को संविधान सभा में जवाहरलाल नेहरू के ट्रिस्ट विद डेस्टिनी भाषण से कुछ मिनट पहले सुचेता कृपलानी ने वंदे मातरम गाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान रंगमंच, कला का वह रूप था जिसने सर्वप्रथम राष्ट्रवादी संदेशों को फैलाने हेतु संगीत का सहारा लिया। उस समय रंगमंच, सिनेमा, ग्रामोफोन जो की प्रचार के तीन माध्यम हुआ करते थे, को प्रशासन की कड़ी नाराजगी सहनी पड़ती थी। नाटकों की स्क्रिप्ट को मंजूरी लेने की आवश्यकता होती थी और उनके प्रदर्शन के समय अक्सर पुलिस मौजूद रहा करती थी। फिल्मों के गीत, राष्ट्रवादी संदेशों आदि की पूरी जांच होती थी तथा उसके बाद ही मंजूरी मिलती थी। इतनी कड़ी शासन व्यवस्था होने के बावजूद भी भारतीय संगीत के कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभाई। संगीत ने सदैव ही देश को एकता के सूत्र में बांधने

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

का कार्य किया है। एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी और दिलीप कुमार राय की वंदे मातरम डिस्क, मुसीरी सुब्रमण्यम अय्यर द्वारा दूर दराज के देशों में भारतीय बंधुआ मजदूरों की दुर्दशा को अपने गीतों द्वारा व्यक्त करना तथा लोगों को भावुक कर देना, स्वर्गीय लता मंगेशकर, स्वर्गीय मोहम्मद रफी द्वारा गाए गए राष्ट्रीय एकता के गीत आज भी हमारी आंखें नम कर देते हैं और हमें अपने देश पर गर्व होने लगता है। यही संगीत की ताकत है 77 साल बाद भी इन कलाकारों के राष्ट्रभक्ति के गीत हमें भावुक कर देते हैं।

अपने इस आलेख में हम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कवि, निबंधकार पत्रकार बंकिम चंद्र चटर्जी जी के योगदान की चर्चा करेंगे। बांग्ला साहित्य का उत्थान 19 में शताब्दी के मध्य से शुरू हुआ। इसमें राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, प्यारी चांद मित्र, माइकल मधुसूदन दत्त, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय और रविंद्र नाथ ठाकुर ने अग्रणी भूमिका निभाई। पहले बंगाली साहित्यकार संस्कृत या अंग्रेजी भाषा में लिखना पसंद करते थे परंतु बांग्ला साहित्य में जन–जन तक अपनी पहचान बनाने वाले शायद बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ही पहले व्यक्ति हुए हैं।

बंकिम चंद्र चटर्जी एक विद्वान लेखक थे। इनका जन्म 27 जून 1838 को पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले के कांठलपाड़ा नामक गांव में हुआ था। इन्होंने मेदिनीपुर में अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण की तथा हुगली के मोहसिन कॉलेज में प्रवेश लिया। बंकिम चंद्र चटर्जी की संस्कृत साहित्य में बेहद रूचि थी तथा वह कविता और उपन्यास दोनों की जानकारी रखते थे। सन् 1856 ईस्वी में उन्होंने कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात इन्हें सरकारी नौकरी प्राप्त हो गई और 1891 में वह सेवानिवृत भी हुए। उनकी प्रथम प्रकाशित रचना दुर्गेश नंदिनी थी जो की एक बांग्ला कृति थी। 1866 में उनकी अगली रचना कपाल कुंडला, 1869 में मृणालिनी, 1873 में विश्व वृक्ष, 1877 में चंद्रशेखर, 1870 में रजनी, 1881 में

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

राज सिंह और 1884 में देवी चौधुरानी थी। बंकिम चंद्र चटर्जी ने 1872 में एक मासिक पत्रिका 'वंग दर्शन' का भी प्रकाशन किया। उपन्यासों के अलावा बंकिम चंद्र चटर्जी ने कृष्ण चरित्र, धर्म, तत्व, देव तत्व, गीता पर विवेचन आदि रचनाएं भी लिखी। 1872 में वंग दर्शन पत्रिका भी शुरू की। बंकिम चंद्र चटर्जी ने एक बड़ी सुंदर बात कही कि जब तक हम अपनी भावना को अपनी मातृभाषा में व्यक्त नहीं करते तब तक हमारी उन्नति नहीं होगी। ऐसा इसलिए भी कहा गया क्योंकि उनका स्वयं का अधिकांश कार्य बंगाली भाषा में ही हुआ। अपने लेखन कार्य में वह सामाजिक सुधार भी बताते थे। वह कहते थे कि व्यक्ति अपनी भाषा से ही उन्नति करता है। ज्ञान वृद्धि हेतु चाहे कितनी भी भाषाओं का प्रयोग कर लो परंतु प्रगति के लिए अपनी भाषा का चुनाव भी सही मार्ग है। सन 1894 में इस क्रांतिकारी उपन्यासकार ने दुनिया से अलविदा ली।

आनंद मठ तथा वंदे मातरम गीत की रचना

आनंद मठ का प्रकाशन सन् 1882 में हुआ और यह बंकिम चंद्र जी का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास रहा। इसी से प्रसिद्ध गीत जो कि अब हमारे भारत वर्ष का राष्ट्रगीत है 'वंदे मातरम' लिया गया। इस उपन्यास में तत्कालीन ईस्ट इंडिया कंपनी के वेतन के लिए लड़ने वाले भारतीय मुसलमान और संन्यासी ब्राह्मण सेना की गाथा है। यह उपन्यास और इसकी कहानी हिंदुओं और मुसलमान को एकता के सूत्र में बांधती है। इस उपन्यास से लिया गया गीत वंदे मातरम स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक जुनून बन गया तथा भारत मां की जय जयकार का यह अद्भुत नारा 'वंदे मातरम' स्वतंत्रता काल में एक प्रेरणा स्रोत बन गया। कहते हैं कि अंग्रेजों ने इस ग्रंथ पर प्रतिबंध लगा दिया था जिसे भारत के स्वतंत्र होने के बाद हटाया गया था। यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि इसका ना जाने कितनी ही भाषाओं में अनुवाद किया गया तथा प्रकाशित किया गया इस उपन्यास में 1770 से 1774 तक के बंगाल का चित्र प्रदर्शित किया गया है। अगस्त 1947 में औपनिवेशिक शासन की समाप्ति से पहले कांग्रेस

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

कार्य समिति द्वारा अक्टूबर 1937 में गीत के पहले दो छंदों को भारत के राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया गया। गीत के बोल इस प्रकार थे –

वन्दे मातरम!

सुजलां सुफलाम्

मलयजशीतलाम्

श्स्यश्यामलाम्

मातरम।

शुभ्रज्योत्सनापुकितयामिनीम्

फुल्लकुसुमितद्रुमदलशेभिनीम्

सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्

सुखदां वरदां मातरम्।।

24 जनवरी 1950 को भारत की संविधान सभा द्वारा इस गीत को एक राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया गया। इस अवसर पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि इस गीत को भारत के राष्ट्रगान जन गण मन के साथ समान रूप से स्थान मिलना चाहिए। गौरतलब है कि भारत के राष्ट्रगान जन गण मन की रचना 11 दिसंबर 1911 में भारत के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा की गई थी। उन्होंने ही वंदे मातरम की प्रसिद्ध धुन का निर्माण किया था। वंदे मातरम गीत हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और भारत को एक स्वतंत्र एवं संप्रभु राष्ट्र बनाने के लिए हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए बलिदान की याद दिलाता है। यह गीत हमें अपनी मातृभूमि की रक्षा करना सिखाता है।

निष्कर्ष

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

वंदे मातरम गीत सभी भारतीयों के दिलों में एक विशेष स्थान रखता है। यह हमारे देश की समृद्ध संस्कृति और विरासत की याद दिलाता है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित भारत का राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम वास्तव में भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक रतन है। जिस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वंदे मातरम गीत को सुनकर स्वतंत्रता सेनानियों में जोश भर जाता था वैसे ही आज भी इसकी धुन सुनकर मन में देशभक्ति का जज़्बा एक बार फिर जागृत हो जाता है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. देवी चौधुरानी, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय– मेपल प्रैस प्राइवेट लिमिटेड (1 सितंबर 2021) नोएडा
2. कृपाल कुंडल, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय– मेपल प्रैस प्राइवेट लिमिटेड (एक सितंबर 2021) नोएडा
3. मृणालिनी, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय मेपल प्रैस प्राइवेट लिमिटेड (1 सितंबर 2021) नोएडा
4. आनंद मठ, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, मेपल प्रैस प्राइवेट लिमिटेड (1 सितंबर 2021) नोएडा
5. आनंद मठ, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, फिंगरप्रिंट पब्लिशिंग (1 नवंबर 2019) प्रकाश बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 113 ए अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली–110002
6. जन गण मन, प्रभात झा, अर्चना प्रकाशन, सितारा दीनदयाल परिसर, महावीर नगर भोपाल
7. बायोग्राफी ऑफ बंकिम चंद्र चटर्जी, रमेश पब्लिशिंग हाउस, (24 दिसंबर 2020)
8. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय एंड इंटेलेक्चुअल बायोग्राफी, अमिया पी सेन , ओ. यू. पी. इंडिया (23 जुलाई 2008)
9. बंकिम चंद्र चटर्जी द लिटरेरी माएस्ट्रो ऑफ बंगाल, अनिल कुमार, प्रभात प्रकाशन, (12 मार्च 2017)

Siddhanta's International Journal of
Advanced Research in Arts & Humanities
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Impact Factor : 5.9, ISSN(O) : 2584-2692
Vol. 1, Issue 6(1), July-August 2024
(Role of Bengal in Freedom Struggle of India - Special Issue)
Available online : https://sijarah.com/

Websites

(1) hindi.one India.com

(2) www.prabhasakshi.com

(3) mapsofindia.com

(4) https://hi.wikipedia.org